विद्यावारिधि में प्रवेश हेतु प्रस्तावित शोध पत्र

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

“ महाकवि भवभूति के रूपकों में स्त्री विमर्श: एक समीक्षात्मक अध्ययन ”

शोध निर्देशिका — शोधकर्त्री

डा० अर्चना कुमारी दुबे — कुमारी जया

विभागाध्यक्ष

स्नातकोत्तर संस्कृतविभाग

राँची विश्वविद्यालय राँची

प्रस्तावना –

यह सृष्टि स्त्री और पुरुष के सहयोग से चल रही है। स्त्री और पुरुष संसार रूपी रथ के दो पहिए की तरह है जिस प्रकार रथ सिर्फ एक पहिए से गतिमान नहीं रह सकता है उसी प्रकार यह संसार भी सिर्फ स्त्री अथवा सिर्फ पुरुष के सहारे चल नहीं सकता है। भारतीय दर्शन परंपरा में जो सर्व प्राचीन दर्शन है वह भी दार्शनिक रूप से इस बात की पुष्टि करता है। सृष्टि प्रक्रिया के लिए सांख्य भी प्रकृति और पुरुष के संयोग को आवश्यक मानता है हालांकि वहां पुरुष का अर्थ आत्मा है और प्रकृति का अर्थ अति सूक्ष्म जड़त्व है। फिर भी इतना तो स्पष्ट है कि सृष्टि प्रक्रिया के लिए दो तत्वों का संयोग अपरिहार्य है। इस सांसारिक चेतन जगत् में भी सांसारिक जीवन बनाए रखने के लिए दो तत्वों (पुरुष तत्त्व और स्त्री तत्त्व) का संयोग आवश्यक है। दर्शन सांसारिक जीवन को अधिक महत्व नहीं प्रदान करता है किंतु यह भी सत्य है कि सांसारिक जीवन के बिना आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि यह सांसारिक जीवन जीव के परम लक्ष्य है। उसके आत्मस्वरूप के साक्षात्कार के लिए साधकतम है।

सांसारिक जीवन की प्राप्ति, पोषण तथा संरक्षण में जितनी महत्वपूर्ण भूमिका पिता के रूप में पुरुष की होती है उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका स्त्री की भी होती है। व्यवहारिक जीवन में स्त्रियों की भूमिका को कमतर आंका नहीं जा सकता है, वे माता, पत्नी, पुत्री, बहन एवं प्रेयसी के रूप में जीवन को सरस बनाते हुए मनुष्य के हृदय को उल्लसित करती है। प्राचीन काल से लेकर अद्यावधि पर्यन्त अपनी सार्थकता एवं जीवन के विविध क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित किया है, चाहे वे घोषा, अपाला, विश्ववारा आदि ऋषिकाएं हो, जिन्होंने वैदिक मंत्रों का साक्षात्कार कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया अथवा रानी चिनम्मा, रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती आदि वीरांगनाएं जिन्होंने अपनी वीरता, अदम्य साहस एवं प्रखर युद्ध कौशल से दुश्मनों के दांत खट्टे कर दिये। आधुनिक भारत में भी अनेक स्त्रियों ने अपने राष्ट्र को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़ – चढ़कर हिस्सा लिया, जिनमें मैडम भिकाजीकामा, सरोजनी नायडू आदि स्त्री सेनानियां प्रमुख रूप से स्मरणीय है। ऐसी अनगिनत युवतियां एवं स्त्रियां हैं जिन्होंने अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र के नाम पर अपने आपको न्योछावर कर दिया जिनका उल्लेख हमें इतिहास में प्राप्त नहीं होता है। जब स्त्रियों ने जीवन के

सभी क्षेत्रों में अपनी भूमिका सिद्ध की है और परिवार, समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते आई है तब उन्हें भी व्यवहारिक रूप से पुरुषों के समान अवसर, अधिकार, जिम्मेदारियां एवं स्वतंत्रता दी जानी चाहिए।

संस्कृत के काव्यों में कवियों ने स्त्रियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। प्रायः संस्कृत साहित्य की सभी कृतियों में स्त्रियों को कथावस्तु के केंद्र में रखा गया है चाहे वह अभिज्ञानशाकुन्तलम् की शकुंतला हो अथवा कादंबरी की कादंबरी। अन्य रचनाओं में भी महाकवियों ने स्त्रियों को महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की है जैसे स्वप्नवासवदत्तम् में वासवदत्ता, वेणीसंहारम् में द्रौपदी, मालविकाग्निमित्रम् में मालविका आदि उदाहरण भरे पड़े हुए हैं।

महाकवि भवभूति करुण रस के सिद्धहस्त कवि हैं। स्त्री का जो सर्वाधिक वंदनीय, आदरणीय तथा प्रशंसनीय रूप है वह मातृ रूप। माता को करुणा की मूर्ति कहा गया है। अतः स्त्री की करुणामय स्वरूप का वर्णन जितना बेहतर महाकवि भवभूति कर सकते हैं उतना कोई नहीं। महाकवि भवभूति करुण को ही एकमात्र रस मानते हैं (करुण एव एको रसः)। करुण रस से ही अन्य सभी रसों की उत्पत्ति होती है। नाट्य शास्त्र की भाषा में हम कह सकते हैं कि करुण रस अन्य सभी रसों के लिए विभाव तथा व्यभिचारी भाव स्वरूप है। यह सभी रसों को उत्पन्न भी करता है और पुष्ट भी करता है। अधिकांश काव्य में स्त्रियों को श्रृंगार, करुण, वीर तथा रौद्र रस में चित्रित किया गया है। मेरा मानना है कि महाकवि भवभूति स्त्री चित्रण में अन्य महाकवियों से आगे निकल गए हैं क्योंकि महाकवि भवभूति का प्रिय रस करुण है तथा स्त्रियों का लोक वांचित स्वरूप करुणमयी स्वरूप है। चाहे स्त्री किसी अवस्था की हो करुणामयी स्वरूप के बिना उसका स्त्रीत्व अधूरा - सा प्रतीत होता है। स्त्री का करुणामयी स्वरूप उसकी शोभा की वृद्धि करता है तथा उसे समाज में और अधिक आदरणीय एवं रक्षणीय बना देता है। अतः ऐसी करुणामयी स्त्री के चित्रण और चिंतन में भवभूति से बेहतर और कौन हो सकता है? निःसंदेह कोई नहीं। इसलिए मैंने स्त्री जीवन को ठीक से समझने के लिए अपने प्रस्तावित शोध का विषय महाकवि भवभूति के रूपकों में "स्त्री विमर्श" को चुना है।

समस्या कथन –

मानवीय सभ्यता में इतनी तरक्की के बावजूद भी आए दिन स्त्रियों के साथ अत्याचार की घटनाएं सुनने को मिलती रहती है। अभी हाल में ही ऐसी कई घटनाएं हुई है जो सभ्य मानव समाज के सभ्यता का घोर तिरस्कार किया है। स्त्रियों के साथ होने वाले अत्याचारों की विभत्सता इस स्तर की है कि जिनका जिक्र करने में भी भय उत्पन्न होता है, शरीर में कंपन उत्पन्न हो जाती है कोई स्त्री के टुकड़े-टुकड़े कर फ्रिज में रख रहा है तो कोई कुकर में उबाल रहा है, मानवता इतनी नीचे गिर चुकी है कि कोई दिनदहाड़े खुले-आम किसी लड़की की नृशंसता पूर्वक हत्या कर देता है और लोग बस देखते रह जाते हैं। कोई रोकने का प्रयास तक नहीं करता है या फिर ध्यान ना देते हुए सीधा आगे बढ़ जाते हैं प्रश्न यह है कि स्त्रियों के प्रति इतनी क्रूरतापूर्ण व्यवहार क्यों? इतनी उपेक्षापूर्ण दृष्टि क्यों? इतनी असहिष्णुता क्यों? भौतिक विकास के उन्नत स्तर तक पहुंचने के बावजूद भी मानवीय सभ्यता में पशुओं जैसे बर्बरता क्यों? इतनी मानसिक संकीर्णता क्यों?

प्रस्तावित शोध में मैं इन्हीं प्रश्नों के यथार्थ उत्तरों को जानने का प्रयत्न करूंगी। जिस भारतीय संस्कृति में नारी को देवी का स्वरूप माना जाता है कई अवसरों पर कन्याओं की पूजा की जाती है उसी देश में उनके साथ विभत्स अत्याचार भी हो रहे हैं। आखिर ऐसी विरोधात्मक स्थिति क्यों? क्या हम अपनी भारतीय संस्कृति को भूलते जा रहे हैं? आदि इन्हीं प्रकार के समस्याओं एवं प्रश्नों के समाधान जानने का प्रयत्न मैं अपने प्रस्तावित शोध कार्य में करूंगी।

शोध प्रश्न –

1. स्त्री विमर्श की परंपरा बहुत पहले से चलती आ रही है तथा यह शोधकर्ताओं के लिए प्रिय विषय रहा है। अलग-अलग विषयों पर एवं विविध क्षेत्रों में स्त्री विमर्श पर कार्य हो चुकी है। मेरा प्रस्तावित शोध कार्य इस प्रश्न पर टिका हुआ है कि क्या साहित्य स्त्रियों की दशा एवं दिशा सुधारने में मददगार साबित हो सकता है ? हालांकि साहित्य में भी स्त्री विमर्श पर अनेक कार्य हो चुके हैं फिर भी मेरा विषय पूर्व में किए गए शोध कार्यों से थोड़ा भिन्न है। जिस प्रकार मानवीय सभ्यता में क्रूरता, पशुता, बर्बरता एवं निर्ममता का प्रवेश होता जा रहा है और करुणा का ह्रास होता जा रहा है क्या इस परिदृश्य में करुणा के उपासक महाकवि भवभूति प्रासंगिक सिद्ध हो सकते हैं?

2. क्या मानव समाज महाकवि भवभूति के काव्यों का अध्ययन एवं अनुशीलन करके अपने में करुणा का संचार कर सकता है?

3. क्या मानव समाज महाकवि भवभूति के काव्यों का अध्ययन एवं अनुशीलन करके स्त्रियों के प्रति आदरवान एवं करुण हो सकता है?

4. मैं यह भी जानना चाहती हूं कि महाकवि भवभूति का स्त्रियों के प्रति चिंतन कैसा है? क्या उनके चिंतन का लाभ वर्तमान कालीन स्त्रियों की स्थिति को सुधारने में मिल सकता है?

5. महाकवि भवभूति प्रारंभिक मध्यकालीन भारत के प्रसिद्ध कवि थे उनका जो स्थिति काल है वह प्राचीन और मध्यकालीन भारत का संधि काल है। वे उस समय थे जब प्राचीन भारत अस्त हो रहा था और मध्यकालीन भारत उदित हो रहा था। अतः उनके काव्य से प्राचीन और मध्यकालीन भारत में स्त्रियों के प्रति चिंतन परंपरा का ज्ञान प्राप्त हो सकता है क्योंकि कोई भी कवि हो उसकी रचनाओं में तत्कालीन समाज का प्रभाव पड़ता ही है। कवि के रचनाओं में उसके स्वयं के चिंतन के साथ-साथ तत्कालीन समाज के चिंतन का प्रतिबिंब भी दिखलाई पड़ता है।

6. महाकवि भवभूति के रचनाओं में स्त्रियों की स्थिति कैसी है?

7. क्या महाकवि भवभूति के रूपकों में समानता एवं स्वतंत्रता की अवधारणा परिलक्षित होती है?

उद्देश्य –

1.जिस प्रकार समाज का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है उसी प्रकार साहित्य का प्रभाव भी समाज पर पड़ता है। दोनों एक - दूसरे के पूरक है। समाज के बिना साहित्य सिर्फ कल्पनाश्रित हो जाएगा तथा साहित्य के बिना समाज बर्बर हो जाएगा। जिस समाज में अच्छे साहित्य की रचना नहीं होती वह समाज सूखे पत्तों की तरह आपस में ही रगड़ खाकर टूटकर शीघ्र ही बिखर जाते हैं। वर्तमान समय में भी साहित्य की रचना हो रही है लोग साहित्योन्मुख है परंतु दुर्भाग्य यह है कि लोगों को अच्छे साहित्य की संगति नहीं मिल पा रही है जो उन्हें मनोरंजन के साथ-साथ सद्ज्ञान और संस्कार भी दे। लोग आजकल केवल मनोरंजन के लिए साहित्य के शरण में जा रहे हैं। मेरे प्रस्तावित शोध का उद्देश्य यह है कि लोगों का अच्छे साहित्य से परिचय हो जहां वे मनोरंजन के साथ-साथ अपनी सभ्यता और संस्कृति का ज्ञानार्जन तथा संस्कारार्जन भी करें जिस प्रकार साहित्य सरस होता है लोगों में भी वैसी ही सरसता एवं समरसता आए और जिस प्रकार महाकवि भवभूति के काव्यों में करुणा का विलास होता है उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी करुणा और मानवता का विलास आए।

2. जिस प्रकार उत्तररामचरित में भगवान राम माता सीता के लिए विलाप करते हैं जिसके लिए महाकवि भवभूति ने लिखा है-

"अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्"

यदि आज के समय में कोई पुरुष अपनी स्त्री के लिए ऐसा विलाप करें तो शायद लोग उसका उपहास करें क्योंकि पहली बात तो यह है कि समाज में पुरुषों का रोना उनकी भीरुता और दुर्बलता का प्रतीक माना जाता है दूसरी बात यदि कोई पुरुष स्त्री के लिए रोए तो उसे भी सही दृष्टि से नहीं देखा जाता है। संभवतः राम के समय में भी यही स्थिति रही होगी इसलिए राम जब पंचवटी के वन में स्वयं को एकांत पाते हैं तो उनके हृदय के अंदर का दुख, क्षोभ एवं पीड़ा फूट पड़ती है और वे बच्चों की तरह बिलख - बिलख कर रोने लग जाते हैं तथा शोक के प्रबल आवेश में एक साधारण मनुष्य की भांति बार-बार मूर्छित हो जाते हैं अपनी इतनी गहरी पीड़ा को राम अयोध्या में रहकर व्यक्त नहीं कर सकते थे क्योंकि उन्हें पता था कि यदि वे सबके सामने अपनी पीड़ा व्यक्त करेंगे तो वे लोगों के उपहास एवं निंदा का पात्र बन जाएंगे। महाकवि भवभूति ने उत्तररामचरित में राम के शोक, पीड़ा एवं करुणा का उद्रेक दिखाकर राम का सीता के प्रति जो निश्चल प्रगाढ़ प्रेम, करुणा एवं समर्पण प्रदर्शित किया है वह आज संपूर्ण पुरुष समाज

के लिए अनुकरणीय है। मेरे प्रस्तावित शोध का उद्देश्य यह है कि जैसी उदात्त करुण भावना महाकवि भवभूति ने राम के हृदय में प्रदर्शित की है वैसे ही उदात्त करुण, प्रेम तथा सम्मान की भावना सभी मनुष्यों के हृदय में आप्लावित हो जाय।

3. महाकवि भवभूति के रूपकों का गहन अध्ययन एवं मनन करके उनके स्त्री संबंधी चिंतन को समझना एवं लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना। अपने शोध के माध्यम से ऐसे तथ्यों एवं अवधारणाओं को प्रस्तुत करना जिससे स्त्री - पुरुष की व्यवहारिक समानता को बढ़ावा मिले। स्त्री-पुरुष के मध्य परस्पर आदर एवं सम्मान की भावना में उत्तरोत्तर वृद्धि हो।

4. एक ऐसे समाज का निर्माण जहां पुरुषों के द्वारा स्त्रियां पीड़ित एवं शोषित न हो रही हो और साथ ही साथ पुरुष भी स्त्रियों के द्वारा पीड़ित न हो रहे हो।

शोध परिकल्पना –

मेरा प्रस्तावित शोध कार्य निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है –

1. वर्तमान समय में समाज में बढ़ती क्रूरता एवं बर्बरता का कारण अपने पुरातन भारतीय संस्कृति के आदर्शों से बढ़ती हुई दूरी है। भारतीय संस्कृति का आदर्श हमें अपनी प्राचीन काव्यों में प्राप्त होता है परंतु दुर्भाग्य यह है कि हम उन अमूल्य काव्यों से दूर होते जा रहे हैं जैसा कि कहा गया है- "सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्" उसी प्रकार से यह भी सत्य है कि "सत्साहित्य - संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्" मेरा यह मानना है कि समाज यदि अच्छे काव्यों की संगति करें तो स्त्रियों के प्रति होने वाले अपराधों में भारी कमी आ सकती है।

2. जिस प्रकार महाकवि भवभूति ने अपने काव्यों में करुणा का संचार किया है यदि वही करुणा और उदारता का संचार सभी मनुष्यों में हो जाए तो एक आदर्श मानव समाज की स्थापना की जा सकती है।

3. जिस प्रकार महाकवि भवभूति ने अपने रूपकों में स्त्री पात्रों का जैसा उदात्त चित्रण किया है यदि वही उदात्त चित्रण समाज में व्यवहारिक रूप से सजीव हो उठे तो समाज में स्त्रियों की स्थिति बहुत ही गरिमामय, आदरपूर्ण तथा श्लाघनीय हो जाएगी एवं स्त्रियां भी और अधिक पुष्ट रुप से परिवार, समाज एवं राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकेंगी।

4. महाकवि भवभूति के काव्यों का अनुशीलन समाज में स्त्रियों की दशा में सुधार लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शोध प्रविधि –

प्रस्तावित शोध कार्य में मैं वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक सर्वेक्षणात्मक तथा मनोवैज्ञानिकात्मक आदि शोध विधियों का सहारा लूंगी।

प्रासंगिकता /लोकोपयोगिता –

स्त्री विमर्श हमेशा से एक प्रासंगिक विषय रहा है स्त्रियों की दशा एवं स्थिति में सुधार लाने के लिए राज्य सरकारों तथा केंद्र सरकार द्वारा अनेकों कार्यक्रम तथा योजनाएं चलाई जा रही है एवं विविध संस्थाओं की स्थापना की गई है। स्त्रियों की दशा तथा स्थिति में सुधार लाने के लिए

बहुत से साधन हो सकते हैं जिनमें से एक साधन साहित्य अनुशीलन भी हो सकता है जैसा कि हम पूर्व में ही वर्णन कर चुके हैं।

प्रस्तावित शोध कार्य की लोकोपयोगिता यह होगी कि मेरे शोध कार्य के परिणाम स्वरूप उपस्थित तथ्य, अवधारणाएं, अवलोकन, परिणाम तथा निष्कर्ष लोगों को स्वयं में स्त्रियों के प्रति करुणा, उदारता, सहिष्णुता तथा आदर की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित करेंगे।

अध्याय विभाजन

प्रथम अध्याय

महाकवि भवभूति का जीवन एवं सामान्य परिचय

- महाकवि भवभूति का काल
- महाकवि भवभूति का जीवनवृत्त
- महाकवि भवभूति की रचनाएँ
- महाकवि भवभूति की रचनाशैली

द्वितीय अध्याय

महिकवि भवभूति के रूपकों का सामान्य परिचय

- रूपक की परिभाषा एवं रूपक काव्य विधा की विशेषताएँ
- उत्तररामचरित का सामान्य परिचय
- महावीरचरित का सामान्य परिचय
- मालतीमाधव का सामान्य परिचय

तृतीय अध्याय

संस्कृत साहित्य और स्त्री विमर्श

- स्त्री विमर्श की अवधारणा
- संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श की परम्परा का संक्षिप्त परिचय
- संस्कृत साहित्य के विकास में स्त्री पात्रों की भूमिका
- महाकवि भवभूति के रूपकों में स्त्रियाँ

चतुर्थ अध्याय

महाकवि भवभूति के रूपकों में स्त्रियों की स्थिति

- मालतीमाधव में नारी की स्थिति
- महावीरचरित में स्त्रियों की स्थिति
- उत्तररामचरित में स्त्रियों की स्थिति
- भवभूति का स्त्री-चिन्तन और तत्कालीन समाज

<u>पंचम अध्याय</u>

स्त्रियों की वर्तमान सामाजिक स्थिति

- वर्तमान समाज का बढ़ता भौतिकवादी दृष्टिकोण
- वर्तमान समाज में स्त्रियों के प्रति पुरूषों का दृष्टिकोण
- क्या स्त्री एक भौतिक वस्तु है?
- क्या स्त्री मात्र उपभोग की वस्तु है?
- वर्तमान समाज में स्त्री सम्मान और स्त्री अधिकारों की सुरक्षा

<u>षष्ठ अध्याय</u>

वर्तमान समय में स्त्री-दशा में सुधार के परिप्रेक्ष्य में भवभूति के रूपकों की उपयोगिता

- भवभूति के रूपकों में निहित नारी आदर्शों की प्रासंगिकता
- भवभूति के रूपकों में दृष्टिगोचर नारी के प्रति पुरुष का आदरभाव
- भवभूति के रूपकों में परिलक्षित स्त्री-पुरुष का आदर्श अन्तःसन्बन्ध
- भवभूति के रूपकों में नारी समाज के लिए प्रतिष्ठापित नारी आदर्श
- भवभूति के रूपकों में पुरुष समाज के लिए प्रतिष्ठापित पुरुष आदर्श
- आधुनिक समाज में भवभूति के रूपकों के अनुशीलन के संभावित लाभ

उपसंहार